Today's Poem – 20.05-2014

तुम्हें अभी अल्लाह मिला है तो बनो सुल्टे

अपने को देह समझ ना बनो उल्टे

पुरानी दुनिया को अब कब्रिस्तान बनना है

इसलिए तुम्हें इसमें मोह नहीं रखना है

बाप समान स्वयं को आत्मा निश्चय करना है

कभी कोई विकर्म नहीं करना है

ड्रामा एक्यूरेट है,किसी को दोषी नहीं समझना

बाप समान बनकर दिखाना

ग्लानि वा डिस्ट्रबेन्श को सहन करना और समाना

अर्थात् अपनी राजधानी निश्चित करना

मेरा बाबा!!

ॐ शान्ति !!!